

Inhalt

| | | |
|-----|---|----|
| 00. | Vorwort | 9 |
| 01. | Exposition | 11 |
| 02. | Die Welt als Welle und Darstellung | 16 |
| 03. | Ausweitung der Denkzone | 25 |
| 04. | Kein Raum für Zeit | 29 |
| 05. | Geist im Ungeist | 34 |
| 06. | Joker | 43 |
| 07. | Der Teil und das Ganze sind das Eine und seine Veränderungen | 49 |
| 08. | Die zeitlose Wiederkehr des Gleichen | 53 |
| 09. | De-Realisationen | 57 |
| 10. | Jenseits von Gut und Böse | 63 |

| | | |
|-----|--|-----|
| 11. | Der Ungeist in der Maschine | 67 |
| 12. | Das ewig Kohärente | 76 |
| 13. | Trivialer Realismus | 81 |
| 14. | Willensfreiheit contra Un(tertanen)geist | 89 |
| 15. | Neustart | 94 |
| 16. | Ausweg aus dem Fliegenglas | 103 |
| 17. | Die Erkenntnis des Seins im Ganzen | 108 |
| 18. | Das Paradigma des geistigen Universums | 119 |
| 19. | Unbestimmtheit als Aufgabe | 125 |